व्याख्यान - 6
08-07-2020

स्नातक तृतीय खंड

मैथिली कथा साहित्यक परम्परा

उपनिषदक कथा प्रायः धार्मिक रहैत छल। जाहिमे बेसी उपदेशात्मक बातक समावेश होइत रहैक। ई कथा सभ मनोरंजक होइत छल। जाहिमे विविध शंकादिक समाधानक रूपमे प्रश्नोत्तरक समावेश कयल जाइत छल। जाहिमे श्वेत परीक्षा, नचिकेताक आदर्श, शतानीक आ मैत्रेयी याज्ञवल्क्य : आरुणि गार्गी, श्वेतकेतु आ उद्दालक, आरुणी कुमार आ गुरु दरबार, ऋभुकेतु तथा महाशाल, शौनक आ अंगिरा आदि कथा विशेष उल्लेखनीय कहल जा सकैत अछि। वास्तवमे वेद आ उपनिषदमे जाहि प्रकारक कथा साहित्यक उल्लेख प्राप्त होइत अछि, ओ भविष्यमे कथा साहित्यक निर्माण दिशाक संकेत कयलक। ई साहित्यक धारामे आगू चलि कऽ कथा रचनाक सृजन आ प्रेरणा स्रोत बनल। परवर्ती कालमे अनेक पौराणिक कथाक सृष्टि भेल जे पैघ-पैघ शीर्षकक आधार ग्रंथक रूपमे 'रामायण' सँ महाभारतक स्वरूप ग्रहण कयलक। एहि महाकाव्यमे जे कथा सभ वर्णित अछि प्रारम्भमे अल्प रूपें उपलब्ध त छल मुदा कल्पनाक विस्तार आओर धार्मिक भावनाक विकास पर अधिक विस्तृत भऽ महान ग्रंथक रूप धारण कऽ संग्रहित भेल आ महाकाव्यक रूपमे प्रसिद्धि प्राप्त कयल। एहि प्रसंग प्रो॰ रमानाथ झाक विचार द्रष्टव्य थिक

ए नेनाकेँ बोध होइतहिँ कथा सुनबाक उत्सुकता होइत छैक। तहिना मानवजातिक विकासक आरम्भहिसँ कथाक प्रति अति सुखद परिलक्षित होइत अछि। इएह एक गोट साधन प्रारम्भमे भावाभिव्यक्तिक हेतु सर्वदा दृश्य होइत अछि जाहिमे बहुधा किछु मौलिकेँ प्रबन्ध काव्यक स्वरूप धारण कए लेत अछि जे अनेक नाम महाकाव्य कहबैत अछि, भारतवर्षहुमे रामायण आ महाभारत एवं अन्यान्य गाथा सभ एकटा दृष्टान्त थिक। मिथिलाक जनपद भाषामे इएह दुहू प्रकारक साहित्यिक रचना आरम्भमे लोकानुरंजक भेल होएत"।

भारतवर्ष पर्वक देश कहल गेल अछि। वर्ष भरि देशक कोनो ने कोनो ठाम भिन्न-भिन्न सम्प्रदायक लोक द्वारा पावनि मनाओल जाइत अछि। एहि पावनि विशेष सँ सम्बन्धित कथा सेहो रहैत अछि। किछु एहनो पावनि होइत अछि जे सम्पूर्ण भारतवर्षमे एक समान होइत अछि आ ओकर कथा सेहो एकहि भाषामे होइत अछि - जेना - कृष्णाष्टमी / शिवरात्रि।

क्रमशः -

डॉ० पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक

REDMI NOTE 8 PRO
MI DUAL CAMERA